Date :- 08/07/2020	Degree Part-I (Hons.)
Content Writer :-	Paper :- I
Akhay Kumar Pathak	Content of the Paper -
Deptt. of Economics,	Micro Economics
Marwari College,	Module - 3
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- LONG PERIOD ANALYSIS OF COST-OUTPUT RELATIONSHIP

दीर्घकाल में उत्पादन की दशायें अल्पकाल की उत्पादन की दशाओं से भिन्न होती है। दीर्घकाल में उत्पादन के साधनों को परिवर्तनशील साधन एवं स्थिर साधन में नही बांटा जा सकता, क्योंकि दीर्घकाल में उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते है। इसलिए उत्पादन की मात्रा को बढ़ाने के लिए उत्पादन के सभी साधनों की मात्रा को बदला जा सकता है अर्थात दीर्घकाल में एक फर्म अपने संयंत्र के आकार में भी परिवर्तन कर सकते है। इसलिए दीर्घकाल में एक फर्म के लिए किसी भी प्रकार की स्थिर लागतें नही होती बल्कि सभी लागतें परिवर्तनशील होती है।

चूँकि दीर्घकाल में सभी लागतें परिवर्तनशील होती है, इसलिए इस काल में सिर्फ दो तरह के लागतों की व्याख्या की जाती है :-

(1) दीर्घकालीन औसत लागत :-

दीर्घकाल में प्रत्येक फर्म विभिन्न आकार के प्लान्टों का प्रयोग कर सकती है। एक निश्चित उत्पादन की मात्रा के लिए एक विशेष प्रकार का संयंत्र उपयुक्त रहता है क्योंकि उस संयंत्र की सहायता से उत्पादन करने से औसत लागत न्यूनतम होती है। दीर्घकाल में, एक उत्पादक उस संयंत्र से उत्पादन करेगा जिससे औसत लागत न्यूनतम हो जाएगी। वस्तु की उत्पादन थोड़ी मात्रा में करने के लिए छोटा संयंत्र लगाया जाएगा तथा अधिक मात्रा में उत्पादन करने के लिए बड़ा संयंत्र लगाया जाएगा, ताकि प्रति इकाई उत्पादन लागत न्यूनतम संभव हो। प्रत्येक संयंत्र का एक अल्पकालीन औसत लागत वक्र होता है। इसी के सहायता से दीर्घकालीन औसत लागत वक्र का अनुमान लगाया जा सकता है। दीर्घकालीन औसत लागत वक्र को परिभाषित करते हुए प्रो० जे० एन० बैन ने कहा है कि

"दीर्घकालीन औसत लागत वक्र वह वक्र है जो दीर्घकाल में उत्पादन के प्रत्येक संभव स्तर के लिए न्यूनतम लागत को प्रकट करता है।" अर्थात दीर्घकालीन औसत लागत वक्र उत्पत्ति के विभिन्न मात्राओं को उत्पन्न करने के लिए प्रति इकाई न्यूनतम संभव लागत को बताती है।

दीर्घकालीन औसत लागत वक्र की विशेषताएँ :-

दीर्घकालीन औसत लागत वक्र की निम्नांकित विशेषताएँ हैं:-

(a) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र विभिन्न अल्पकालीन औसत लागत वक्रों से मिलकर बना है।

(b) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र अंग्रेजी के अक्षर 'U' आकार का होता है। क्रमशः वृद्धि के साथ इसका आधार चपटा होता जाता है।

(c) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र सभी अल्पकालीन औसत लागत वक्रों का उनके न्यूनतम बिन्दु पर स्पर्श नहीं करता है।

(d) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र अल्पकालीन औसत लागत वक्र को काटता नहीं है।

(e) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र सदैव अल्पकालीन औसत लागत वक्रों से नीचा रहता है। अर्थात दीर्घकालीन औसत लागत सदैव कम रहती है।

(f) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र फर्म के लिए विभिन्न उत्पादन मात्राओं पर औसत लागत की संभावनाओं को व्यक्त करती है।

(g) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र फर्म का न्यूनतम बिन्दु दीर्घकालीन न्यूनतम औसत लागत व अनुकूलतम उत्पादन स्तर को बताता है।

(h) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र इच्छित उत्पादन की मात्रा के लिए न्यूनतम संभव लागत की जानकारी देता है।

Maharaza

(ii) दीर्घकालीन सीमांत लागत :- दीर्घकाल में स्थिर लागत तथा परिवर्तनशील लागत का अंतर समाप्त हो जाता है, तथा सभी लागतें परिवर्तनशील हो जाती हैं। अतः दीर्घकाल में एक इकाई के उत्पादन से कुल लागत में जो वृद्धि होती है, उसे दीर्घकालीन सीमान्त लागत कहते हैं।

दीर्घकालीन सीमान्त लागत और दीर्घकालीन औसत लागत से दीर्घकाल में वही सम्बंध होता है जो अल्पकाल में रहता है। इस सम्बंध का निम्नांकित विश्लेषण से स्पष्ट किया जा सकता है:-

(a) जब दीर्घकालीन औसत लागत गिरती है, तो दीर्घकालीन सीमांत लागत उससे कम होती है।

(b) दीर्घकालीन औसत लागत के न्यूनतम बिन्दु पर दीर्घकालीन सीमांत लागत उसके बराबर हो जाती है।

(c) दीर्घकालीन सीमान्त लागत वक्र दीर्घकालीन औसत लागत वक्र की अपेक्षा अधिक तेजी से नीचे की ओर गिरता है तथा अधिक तेजी से ऊपर की ओर उठता है।

(d) अनुकूलतम उत्पादन के बिन्दु पर अल्पकालीन औसत लागतें, अल्पकालीन सीमांत लागत दीर्घकालीन औसत लागत एवं दीर्घकालीन सीमान्त लागत एक दूसरे के बराबर होती हैं।

दीर्घकाल में तकनीकी कारकों से जैसे-जैसे फर्म उत्पादन के पैमाने का विस्तार करती है, उत्पादन की औसत लागत में कमी होती जाती है। इस कमी के कारण उत्पादन के मात्रा में वृद्धि होती है तथा वस्तु का मूल्य निर्धारण एक अनुकूलतम स्तर पर सम्भव हो पाता है।

Mcharaza